डा॰ पी॰एस॰ पाटील,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४॰

- संस्तुति -

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु॰ अपर्णा अरविंद पाध्ये का "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य - व्यंग्य" लघु शोध प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

तिथि :- 19 OCT 1995

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४

डा० श्रीमती शशिप्रभा जैन,
रीडर एवं विभागध्यक्ष,
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

- प्रमाणपत्र -

मैं प्रमाणित करती हूँ कि, कु० अपर्णा अरविंद पाध्ये ने मेरे निर्देशन में "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य-व्यंग्य" लघुशोध प्रबन्ध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्० फिल० (हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है और इसमें शोधछात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघुशोध प्रबंन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधछात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोधनिर्देशिका,

(डा० श्रीमती शशिप्रभा जैन)

कोल्हापुर।

तिथि :-

- प्रख्यापन -

"काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य - व्यंग्य" लघुशोध प्रबंन्ध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोधछात्रा,

A.A. Padhye

कोल्हापुर। (कु. अपर्णा अरविंद पाध्ये)

तिथि :- 19 OCT 1995

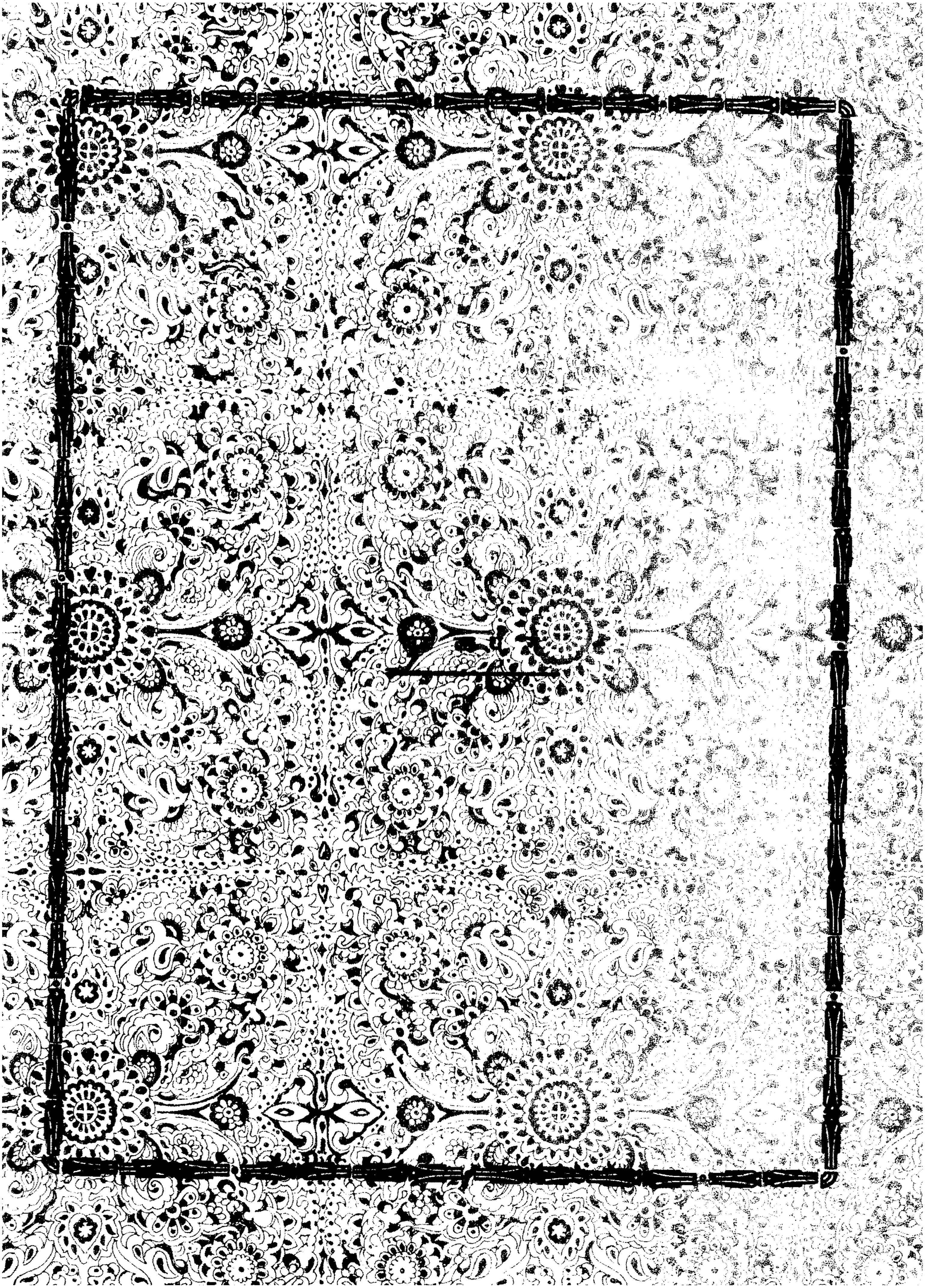

- प्राक्कथन -

एक बार मैंने काका हाथरसी की "भगवान से इन्टरव्यू" कविता पढ़ी जिससे मैं इतनी प्रभावित हुई कि, मैंने सोचा, मैं काकाजी की सारी कविताएँ पढ़ लूँ। मुझे उनकी कुछ रचनाएँ प्राप्त हुई जिन्हे पढ़ने के बाद मैंने मन-ही-मन तय कर लिया कि मैं काका हाथरसी के कविता-संग्रहों पर ही अपना काम करूँगी। जब एम॰फिल॰ में आने के बाद मुझे अपना विषय चुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो मैंने अपनी निर्देशिका डा॰ जैन मॅडमजी से पूछा कि, क्या मैं काका हाथरसी की कविताओं पर अपना काम कर सकती हूँ? तो उन्होंने मुझे सहर्ष स्वीकृति दे दी।

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि, क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इसपर कार्य किया है? इसकी खोज करते हुए मुझे मालूम हुआ कि, शिवाजी विश्वविद्यालय में तो इस विषयपर किसी ने शोध प्रबन्ध या लघु-शोध-प्रबन्ध नहीं लिखा है। अधिक खोजबीन करने पर मुझे पता चला कि, काकाजी के समग्र साहित्य पर अब तक सिर्फ दो पीएच॰डी॰ प्रबन्ध प्रस्तुत हो चुके है -

१. "काका हाथरसी : व्यक्तित्व और साहित्य"।
डॉ॰अमरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल,
रॉंची विश्वविद्यालय, बिहार।

२. "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा।"
डा॰मिथिलेश माहेश्वरी,
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।

लेकिन "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य-व्यंग्य" इस विषयपर अबतक किसी ने नहीं लिखा है। इसलिये मैंने इस विषयपर अपना लघु शोध प्रबन्ध

लिखना शुरू किया। तब मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये।

१. काका जी के जीवन की कौन-सी परिस्थितियों ने उन्हें हास्य-व्यंग्य की ओर प्रवृत्त किया ?

२. हास्य-व्यंग्य का स्वरूप और उसकी परिभाषा क्या है ?

३. काका हाथरसी के काव्य में हास्य-व्यंग्य किन प्रकारों में झलकता है ?

४. काकाजी ने अपने काव्य में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समाज की किन समस्याओं को उठाया है ?

इन सभी सवालों का जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध प्रबन्ध में किया है और अंत में निष्कर्ष उपसंहार के रूप में दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

<u>प्रथम अध्याय</u> - "काका हाथरसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय।"
इस अध्याय में काकाजी के जीवन परिचय के साथ-साथ उनकी अलग-अलग विधाओं में लिखी रचनाओं को विभाजित कर प्रस्तुत की है। साथ ही उनके व्यक्तित्व के पहलुओं को बताते हुए उन्हें प्राप्त सम्मानों की जानकारी दी है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> - "हास्य-व्यंग्य की परीभाषा और स्वरूप"।
इस अध्याय में हास्य और व्यंग्य को अलग-अलग रूप में विभाजित कर उनका अर्थ, परिभाषाएँ, लक्षण और प्रकार बताये हैं। साथ ही हास्य और व्यंग्य में अंतर बताते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य-व्यंग्य।" अध्याय में काका के काव्य में चित्रित हास्य-व्यंग्य के अलग-अलग उदाहरणों को अलग-अलग विभागों में विभाजित कर अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है॥

चतुर्थ अध्याय - "काका हाथरसी के काव्य में विभिन्न समस्याओं का मूल्यांकन।"
इस अध्याय में काकाजी के काव्य में चित्रित धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं को विभाजित कर अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार - सभी अध्यायों के अंत में उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष मैंने प्रस्तुत किया है जो काकाजी की सभी काव्यकृतियों के अध्ययन का सार है।
अंत में मैंने 'संदर्भ ग्रंथ सूची' दे दी है।

मेरे इस लघु शोध प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

१. इसमें पूरा विश्लेषण उपलब्ध सामग्री और प्रत्यक्ष अध्ययनपर आधारित है।

२. काकाजी के काव्य में हास्य-व्यंग्य के सभी प्रकारों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

३. काकाजी के काव्य में उपलब्ध सभी समस्याओं का विवेचन करने का प्रयास किया है।

काकाजी के व्यक्तित्व की जानकारी और समीक्षात्मक ग्रंथों को प्राप्त करने के लिए मुझे बहुत तकलिफ़ उठानी पड़ी। वैसे भी उनके साहित्य पर समीक्षात्मक ग्रंथों की कमी तो है ही। इस संदर्भ में मैं राँची विश्वविद्यालय, बिहार भी गई थी। संदर्भ ग्रंथों की कठिनाई के बावजूद भी इसे सुनियोजित ढंग से पूरा करने का प्रामाणिक प्रयास किया है।

ऋणनिर्देश :-

इस लघु शोध प्रबन्ध की पूर्ति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने मेरी मदद की है, उन सभी को धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सबसे पहले तो मैं अपनी शोधनिर्देशिका डा॰शशिप्रभा जैन जी के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगी जिनके अनमोल मार्गदर्शन से मैं उऋण नहीं हो सकती। उन्होंने मेरे लघु शोध-प्रबन्ध की गलतियों को शीघ्रता के साथ दूर किया, इसी वजह से मेरा लघु शोध-प्रबन्ध इतने कम समय में पूरा हो सका है।

मेरा कोई भी कार्य मेरे माता-पिता के आशिर्वाद के बिना पूरा नहीं होता। उनके आशिर्वाद और मेरे भाई के सहयोग की वजह से ही आज मैंने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया है।

इसके साथ ही डा॰ पी॰एस॰ पाटील (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर), डा॰ अर्जुन चव्हाण (अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर), डा॰बालेन्दुशेखर तिवारी (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, बिहार), डा॰अमरेंद्र प्रसाद अग्रवाल (अध्यापक, जिला स्कूल, राँची, बिहार) इन सभी का मार्गदर्शन भी मुझे मिला।

मेरे शुभचिंतक साथी श्री. भारत कुपेकर, कु॰ सुजाता किल्लेदार, कु॰ गीता भोसले आदिने भी मेरा सहायता की।

लघु शोध-प्रबन्ध की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है - "संदर्भ ग्रंथ"। इसके बिना कोई भी लघु शोध प्रबन्ध पूरा नहीं हो सकता। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल समवेत कर्मचारी वर्ग, राँची विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल समवेत सभी कर्मचारी वर्ग की आभारी रहूँगी, जिन्होंने मुझे बहुमोल मदद की है।

साथ ही मैं टंकलेखक श्री सुधाकर भोसले (कोल्हापुर) की भी आभारी हूँ।

अंत में मैं इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपना लघु शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोधछात्रा,

A.A. Padhye

(कु. अपर्णा अरविंद पाध्ये)

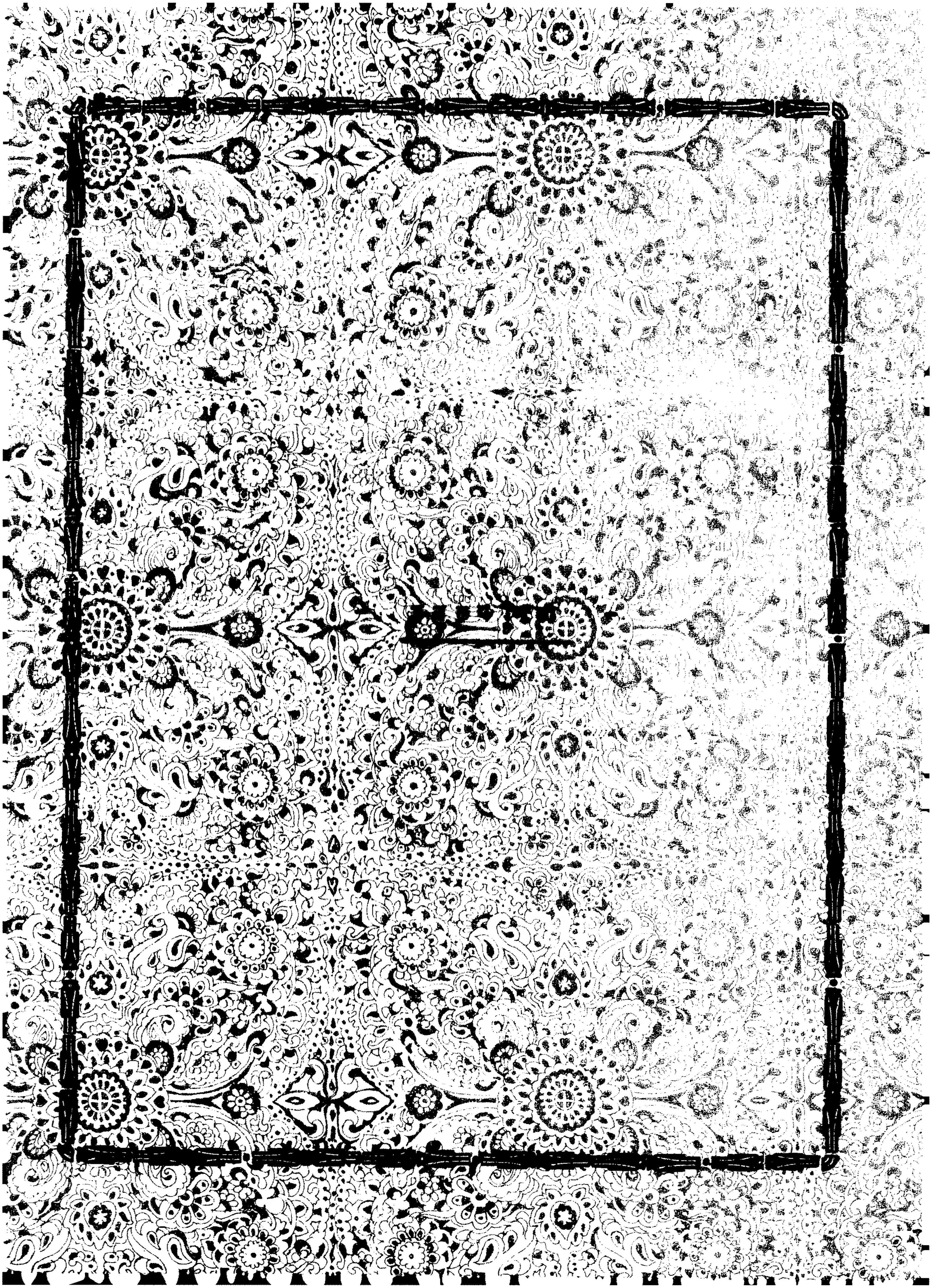

- अनुक्रमणिका -

प्रथम अध्याय - "काका हाथरसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय।"

१.१ व्यक्तित्व।

१. जन्म एवं बचपन, २. शिक्षा, ३. नाट्यअभिनय, ४. आरम्भिक तुकबन्दी, ५. अर्थाभाव और नौकरी, ६. चित्रकारी, ७. पारिवारिक जीवन, ८. बिमारी और ऑपरेशन, ९. प्रभलात बने काकाजी, १०. संगीत कार्यालय की स्थापना एवं उसके प्रकाशन, ११. आदतें और दिनचर्या, १२. घुमक्कडी - पहाड़ी यात्राएँ, तीर्थयात्राएँ, विदेश यात्राएँ, १३. पुरस्कार ट्रस्ट की स्थापना, १४. प्राप्त सम्मान, १५. प्रेरणादायी आदर्श व्यक्ति, १६. अंतरंग दर्शन ।

१.२ कृतित्व।

१.२.१ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ।

१. म्याऊँ, २. काका के कारतूस, ३. काका की फुलझड़ियाँ, ४. जय बोलो बेईमान की, ५. पैरोडियाँ व कविताएँ, ६. काकदूत व अन्य कविताएँ, ७. काका की विशिष्ठ रचनाएँ, ८. काका के व्यंग्यबाण, ९. कक्के के छक्के, १०. लूटनीति मंथन करी।

१.२.२ गद्य-पद्य संग्रह।

१. काका-काकी की नोंक-झोंक, २. काका की चौपाल, ३. काका की महफिल, ४. काका तरंग, ५. काका काकी के लव-लेटर्स, ६. काका का दरबार, ७. काका शतक।

१.२.३ प्रहसन।

१. काका के प्रहसन।

१·२·४ अन्य कवियों की रचनाओं का संकलन एवं संपादन।

१· काका की काकटेल, २· चार सप्तक, ३· खिलखिलाहट।

१·२·५ आत्मकथा।

१· मेरा जीवन ए-वन।

१·२·६ अन्य साहित्य।

१· संगीत सागर, २· संगीत विशारद, ३· राग कोश।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय : "हास्य-व्यंग्य की परिभाषा और स्वरूप।"

२·१ हास्य।

२·१·१ हास्य का अर्थ, २·हास्य का परिभाषा, ३· हास्य के लक्षण, ४· हास्य के प्रकार - आश्रय के आधारपर, शारीरिक क्रियाओं के आधारपर, स्वभाव के आधारपर, हँसने-हँसानेवाले पात्रों की दृष्टि से, भावविकारों की दृष्टि से, पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा - स्मित, वाक्छल, व्यंग्य, वक्रोक्ति, प्रहसन।

२·२ व्यंग्य।

२·२ १· व्यंग्य का अर्थ, २· व्यंग्य की परिभाषा, ३· व्यंग्य के प्रकार धर्मसम्बधीत, समाज सम्बन्धित, साहित्य सम्बन्धित, राजनीति सम्बन्धित, मानवीय दुर्बलताओं से सम्बन्धित।

२·३ हास्य और व्यंग्य में अंतर।

निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय : "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित हास्य-व्यंग्य।"

३·१ १·काकाजी के काव्य का पहला शिकार : काकीजी, २· अन्य रिश्तेदारोंपर हास्य व्यंग्य - पत्नी, बहू, दामाद, साला, ३· शरीर के अवयवोंपर - नाक, दिल, ४· मानवेतर प्राणीयों पर - उल्लू, गदहा,

कौआ, चूहा, भैंस, ५· साहित्यिक हास्य व्यंग्य – कवि सम्मेलन और कवि, विभिन्न वाद, रस, ६· बुध्दिजीवी, ७· डाकू और आत्मसमर्पण, ८· क्रिकेट, ९· फिल्मसीटी, १०· अन्य।

३·२ काका की काव्यभाषा – शब्दप्रयोग, मुहावरे, विचित्र नामावली, अलंकार, छंद।

३·३ काका के काव्यरस – फिल्मी पैरोडियाँ, कवियों की पंक्तियों पर फब्तियाँ, मिनी कविताएँ, शेर।

निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : "काका हाथरसी के काव्य में चित्रित विभिन्न समस्याओं का मूल्यांकन।"

४·१ धार्मिक समस्या।

१· धर्मनिरपेक्षता, २· आधुनिक भक्त और उनकी भक्ति, ३· पद, ४· कीर्तन, ५· चौपाई, ६· वंदना, ७· आरतीयाँ, ८· होली।

४·२ राजनीतिक समस्या।

१· नेता, २· चुनाव, ३· दलबदलू वृत्ति, ४· कुर्सी प्रलोभन, ५· अनशन, ६· चमचे और चापलूसी।

४·३ आर्थिक समस्या।

१· महंगाई, २· आर्थिक विषमता, ३· जनसंख्या वृध्दि, ४· धनलालसा और कंजूसी।

४·४ सामाजिक समस्या।

१· शिक्षा समस्या, २· भाषा समस्या, ३· दहेज समस्या, ४· भ्रष्टाचार और रिश्वत, ५· जनसंख्या, ६· मिलावट, ७· हड़ताल, ८· फैशन, ९· दोमुँहापन, १०· आवश्यक सेवाएँ, ११· समाज के अभिन्न अंग।

उपसंहार।

संदर्भ ग्रंथ सूची।